International School of Astrology and Divine Sciences

Bringing harmony in life.....

"Ramashram" 3/18, Malviya Nagar, Jaipur-302017, Rajasthan, INDIA
Mobile : +91 9414044559, 9829021309
E-mail : anupamjolly@hotmail.com, Web. : www.astrologynspiritualism.com
Blog : http://astrodivinesciences.blogspot.in/ , http://rahasyadhara.blogspot.in/

प्राचीन रमल विद्या व रमल के द्वारा उपास्यदेव का ज्ञान

– आचार्य अनुपम जौली

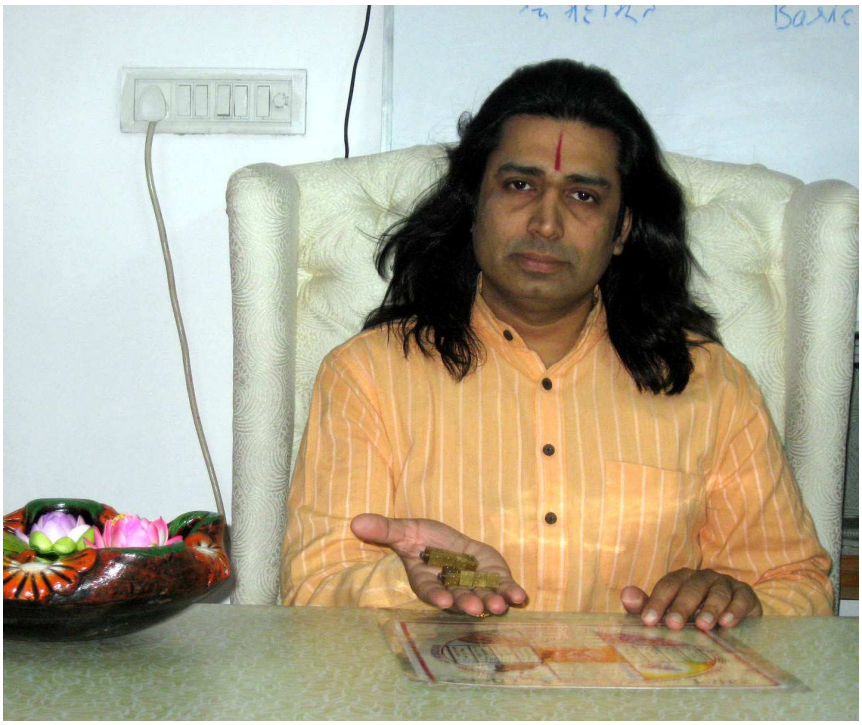

भविष्य को जानने की अनेक पद्धतियों का चलन विश्वभर में अनादिकाल से रहा है और मनुष्य किसी न किसी प्रकार से अपनी जिज्ञासा शान्त करने हेतु अनेक विद्याओं जैसे नाड़ीग्रंथ, प्रश्न ज्योतिष, शगुन विचार, कृष्णमूर्ति पद्धति, पक्षियों की सहायता से भविष्य, रमल पद्धति आदि-आदि का सहारा लेता रहा है।

पुराण काल से रमलशास्त्र विद्या प्रचलित है इसकी जानकारी उपलब्ध है। द्वापर युग में यह शास्त्र प्रचलित था इसका उल्लेख मिलता है। इतिहास में जिमुतवाहन के दरबार में रहे विष्णुगुप्त शर्मा इस शास्त्र के उत्तम ज्ञाता थे। पांडवों के दरबार के 'मय' भी इस विद्या में निपुण थे। परमपूज्य आद्य शंकराचार्य भी इस शास्त्र का गहन ज्ञान रखते थे। रमल शास्त्र के आधार पर ही राजा सुधन्व के दरबार में 'बंद घट' में क्या रखा गया था, सही-सही बताया जा सका। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं।

"Ramashram" 3/18, Malviya Nagar, Jaipur-302017, Rajasthan, INDIA
Mobile : +91 9414044559, 9829021309
E-mail : anupamjolly@hotmail.com, Web. : www.astrologynspiritualism.com
Blog : http://astrodivinesciences.blogspot.in/ , http://rahasyadhara.blogspot.in/

ऐसा माना जाता है कि जनोपयोगी सभी शास्त्रों का उगम उमा-महेश्वर के द्वारा हुआ है। कहा जाता है कि माता पार्वती ने भगवान शंकर से 'सर्वकालीन शास्त्र' के ज्ञान को विशद करने की विनती की और इस शास्त्र का जन्म हुआ। द्वापर युग के उत्तरार्द्ध में किसी विद्वान युवक ने शिवजी की प्रखर आराधना की और शिवजी को प्रसन्न कर लिया। उसने शिवजी से भूत, वर्तमान तथा भविष्य को जानने के ज्ञान का वरदान माँगा। तब शिवजी ने पूर्व रचित 'रमल विद्या' के ज्ञान का वरदान उसे दिया और कहा कि पृथ्वी पर इस ज्ञान के प्रथम ज्ञाता का सम्मान तुम्हें मिलेगा और तुम 'आदम' नाम से पृथ्वी पर जाने जाओगे। यथा समय आदम के अनुयायियों ने इस विद्या का प्रचार एवं प्रसार किया। इसीलिये भारतीय इस बात का दावा करते हैं कि 'रमल शास्त्र' का उगम भारत में ही हुआ है। पुरातन काल से 'पाँसो' का जो खेल खेला जाता है उसे 'रमल पाँसो' के नाम से जाना जाता है। इसीलिये इस शास्त्र को 'रमल शास्त्र' कहलाने की पुष्टि मिलती है।

भारतीयों की तरह यवन भी इस बात का दावा करते हैं कि यह शास्त्र उनके देश से ही सभी जगह पहुँचा है। उनके अनुसार हजरत दानियल अल हिस सलाम ने राजस्थान के रेगिस्तान में मुहम्मद पैगम्बर की इबादत की और नेमत माँगी कि 'या खुदा', भारत में इस्लाम को पुख्ता बनाने के लिये मुझ पर मेहर नजर कर ऐसा इल्म दे कि जिसकी वजह से आम लोग मुझ पर बे-इंतिहा यकीन करे और मैं इस्लाम की जड़ें मजबूत कर सकूँ। 'दानियाल' की इस प्रार्थना से खुश होकर हजरत जिब्राईल अलियस सलाम (पैगम्बर के दूर) प्रगट हुए और उन्होंने दानियल को रेगिस्तान की रेती में अपने पंजों को हथेली की ओर से दबाने की आज्ञा दी। इस दबाव से रेती में जो आकृति निर्माण हुई उसी के गहरे अभ्यास से उस शास्त्र का निर्माण हुआ। 'रमल' शब्द का अर्थ 'रेती' भी है। चूँकि रेत में इस शास्त्र का निर्माण हुआ इसीलिये इसे 'रमलशास्त्र' कहा जाता है। अत: इस शास्त्र के प्रचार एवं प्रसार का दावा वे करते हैं।

रमल पर उपलब्ध साहित्य

वर्तमान समय में जो रमलग्रंथ अधिक प्रचार में है वे संस्कृत में तो हैं किन्तु उनकी पारिभाषिक शब्दावली अरबी भाषा की ही ग्रहण की गई है, जिससे यह भ्रान्ति उत्पन्न होती है कि यह विद्या मुसलमानों की है किन्तु यह अनुमान पूर्णत: गलत है। इसका प्रमाण 'बाबर' नामक यूरोपीय अन्वेषक को प्राप्त पाण्डुलिपि से मिल जाता है कि रमलविद्या मुसलमानों के आगमन से शताब्दियों पूर्व से ही अस्तित्व में है।

ढाई सहस्र वर्ष प्राचीन पाण्डुलिपि - यह पाण्डुलिपि गुप्तकाल में लिखी गई थी। बावर के अनुसार यह पाण्डुलिपि ईसा से साढ़े तीन सौ से पाँच सौ वर्ष पूर्व लिखी गई थी। उसमें पारिभाषिक शब्द अरबी भाषा के न होकर संस्कृत तथा प्राकृत भाषाओं के है। जबकि इस्लाम संसार में कुल 1400 वर्ष मात्र पुराना है और यह पाण्डुलिपि उसके प्रादुर्भाव से एक सहस्र वर्ष पूर्व की है।

गर्गसंहिता की पाशकावलि - श्रीशंकर बालकृष्ण दीक्षित के अनुसार - 'तञ्जौर के राजकीय पुस्तकालय में गर्गसंहिता की एक प्रति है। उसमें पाशकावलि नामक 235 श्लोकों का एक प्रकरण है।' मैंने देखा कि उसके एक श्लोक 'दुन्दुभि' शब्द आया है जो कि उपर्युक्त पुस्तक (बाबर की पाण्डुलिपि) में भी है। इससे सिद्ध होता है कि रमल-विद्या इसी देश की है। बाबर की पाशकावलि की भाषा से यह अनुमान तोता है कि वह शकसंवत् (शालिवाहन) के प्रारम्भ काल के तीन-चार सौ वर्ष पहले की होगी। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय (आज से ढाई हजार वर्ष पहले) हमारे देश में यह विद्या थी। बाद में इसके मूल संस्कृत ग्रंथ लुप्त हो गये और उसके बाद अरबी ग्रंथों के आधार पर ग्रंथ रचे जाने लगे।

"Ramashram" 3/18, Malviya Nagar, Jaipur-302017, Rajasthan, INDIA
Mobile : +91 9414044559, 9829021309
E-mail : anupamjolly@hotmail.com, Web. : www.astrologynspiritualism.com
Blog : http://astrodivinesciences.blogspot.in/ , http://rahasyadhara.blogspot.in/

(भारतीय ज्योतिष पृ. 641)

रमलामृत - यह ग्रंथ विक्रम संवत् 1802 (शकाब्द 1667=सन् 1745 ईस्वी) का रचा हुआ है। इसकी रचना संस्कृत में खान देश के प्रकाश नामक स्थान के निवासी थी जयराम नामक औदीच्य ब्राह्मण ने गुजरात के सूरत नगर में की थी। इसमें श्रीपति तथा भोज के रमलग्रंथों का उल्लेख है।

रमलामृत में 800 श्लोक हैं।

श्रीपति एवं भट्टोत्पल के रमलग्रंथ - श्रीपति (शकाब्द 961) तथा भट्टोत्पल (शकाब्द 888 लगभग) के रमलग्रंथों का उल्लेख आफ्रेच सूची में मिलता है।

रमल चिन्तामणि - इस ग्रंथ में लगभग 700 श्लोक हैं, आनन्द आश्रम पूना में शक 1653 की लिखी एक प्रति की सूचना मिलती है (संभव है कि वह वहाँ से प्रकाशित भी हुई हो), अत: वह शक 1600 से सौ-पचास वर्ष पूर्व ही लिखी गई होगी। इसके रचयिता कोई चिन्तामणि नामक ज्योतिषी थे।

रमलगुजार - यह कोई यवनकृत ग्रंथ रहा होगा और इसका मूल ग्रंथ तत्कालीन अरबी या फारसी भाषा में रहा होगा। कहते हैं कि अकबर के दरबारी पं. बीरबल ने इसे तत्कालीन हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा देवनागरी में लिप्यंतरण किया था। यह ग्रंथ मुद्रित रूप में उपलब्ध है। इसमें पाशा फेंक कर तथा इष्टकाल द्वारा लग्न निकालकर दोनों के समवेत प्रयोग से प्रश्नों का उत्तर देना बताया गया है। इस ग्रंथ में कुल 1041 प्रश्नों के उत्तर हैं। इसका बहुत प्रचार है।

रमलदानयान - यह छोटी सी पुस्तिका भी आजकल हिन्दी-उर्दू में उपलब्ध है। इसी को रमल प्रश्न संग्रह भी कहते हैं। दानयाल एक ईरानी धर्मगुरु (पैगम्बर का) नाम भी है। इसमें पोशाकों द्वारा प्रस्तार करके लगभग 52 प्रश्नों का उत्तर देने की विधि वर्णित की गई है। इस ग्रंथ का रचनाकाल ज्ञात नहीं है। इसकी मूल भाषा फारसी थी।

रमल प्रश्नोत्तरी - इसे 'नेपोलियंस ओराकुलम' कहा जाता है। इसके हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध है। कहते हैं कि नैपोलियन इसका विश्वासपूर्वक उपयोग करता था। इसमें 32 प्रश्न हैं।

रमलनवरङ्ग - इसकी रचना श्री रङ्गलाल गोस्वामी ने शक 1835 (संवत् 1938 विक्रमी) में की थी। ग्रंथ में कुल 471 श्लोक हैं। ग्रंथकार ने इस ग्रंथ को 'रमलनवरत्न' नाम भी दिया है किन्तु यह रङ्गलाल कृत अलग ग्रंथ है, जो रमल-नवरत्न के रचनाकाल के लगभग 71 वर्ष बाद लिखा गया है। ग्रंथ की भाषा अच्छी प्राञ्जल संस्कृत है किन्तु पारिभाषिक शब्दावली अरबी भाषा की ही है। ग्रंथ में रमल-शास्त्र को अच्छी प्रकार से समझाया है और गागर में सागर भरने का प्रयास किया है।

रमल पाँसे - रमल शास्त्र में कुण्डली (जंत्री, पंजिका) तैयार करने की अनेक पद्धतियाँ है। परंतु पाँसों के आधार पर रमल कुण्डली तैयार करने की पद्धति सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। चूँकि पाँसे फैंक कर भविष्य जाना जाता है, अत: इसे 'पाशक विद्या' के नाम से भी जाना जाता है। संस्कृत भाषा में पाँसों को 'पाशक' कहा जाता है। पाँसों का निर्माण करने का तरीका निम्न प्रकार से है-

"Ramashram" 3/18, Malviya Nagar, Jaipur-302017, Rajasthan, INDIA
Mobile : +91 9414044559, 9829021309
E-mail : anupamjolly@hotmail.com, Web. : www.astrologynspiritualism.com
Blog : http://astrodivinesciences.blogspot.in/ , http://rahasyadhara.blogspot.in/

मेष राशि के आरंभ काल (20-21 मार्च) में रवि सायन कहलाता है, उस समय पाँसे तैयार किये जाते हैं। सप्तग्रहों के धातु (राहु-केतु के अलावा) रवि के लिये ताँबा, चन्द्र के लिये चाँदी, शुक्र के लिये राँगा, मंगल के लिए पीतल, बुध के लिये सीसा (यदि सीसा उपलब्ध नहीं है तब निकल), गुरु के लिये सोना और शनि के लिये लोहा। यह प्रत्येक धातु तीन माशा (1 माशा यानी 1.160 ग्राम) के हिसाब से एकत्रित कर उसकी आयताकार लंबी छड़ बनाई जाती है जिसके समान 8 हिस्से किये जाते हैं।

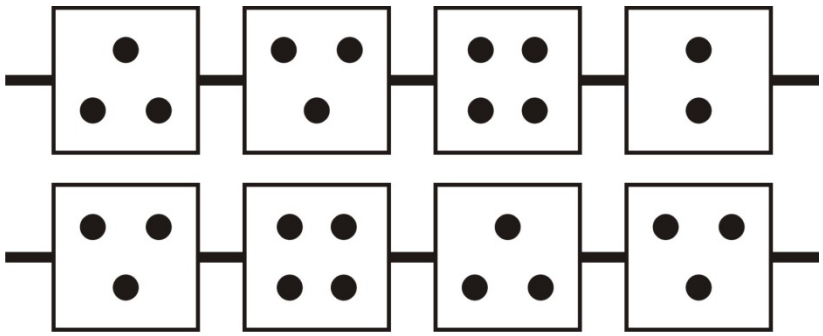

रमल विद्या द्वारा हर प्रश्न का उत्तर प्राप्त किया जा सकता है। इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिये जातक का हाथ लगवाकर या उससे पाँसों को फैकवाकर रमल प्रश्न कुण्डली बनाई जाती है। प्रश्न कुण्डली के द्वारा प्रत्येक प्रश्न का जबाब रमल विद्या से देना संभव है। यहाँ पर रमल के द्वारा उपास्य देव कैसे देखा जाता है का वर्णन किया है।

वैसे तो हर व्यक्ति को अपने कुल परंम्परा की उपासना करना चाहिये या उसकी श्रद्धा के अनुसार। फिर भी अगर कोई पूछता है तो रमल प्रश्नकुंडली मे पाँचवे स्थान मे जो शकल है उसके अनुसार उपासना करनी चाहिये। जैसे पाँचवे स्थान मे अगर :

लह्यान शकल हो तो श्रीदत्तोत्रेय अथवा सिद्धयोगी पुरूष की उपासना करे। (सिद्धयोगी याने संत कबीर संत तुलसीदास, संत रामदास, संत ज्ञानेश्वर महाराज, नरसिंह, सरस्वती व अपने सद्गुरू या कुलगुरू) आदि अवतारी पुरूष।

कब्जतुल दाखिल शकल हो तो श्रीविष्णु या श्रीराम की उपासना करनी चाहिए।

कब्जतुल खारिज शकल हो तो पवनपुत्र श्री हनुमान की उपासना।

जमात शकल के लिये श्री बालाजी की उपासना।

"Ramashram" 3/18, Malviya Nagar, Jaipur-302017, Rajasthan, INDIA
Mobile : +91 9414044559, 9829021309
E-mail : anupamjolly@hotmail.com, Web. : www.astrologynspiritualism.com
Blog : http://astrodivinesciences.blogspot.in/ , http://rahasyadhara.blogspot.in/

फरहा के लिये देवी की उपासना।

उकला शकल के लिये शनी महाराज की उपासना।

अंकीश शकल के लिये श्री हनुमान जी की उपासना।

हुमरा शकल के लिये श्री गणेशजी की उपासना।

बयाज शकल के लिये श्री शिवशंकर की उपासना।

नुस्त्रतुल खारिज के लिये श्रीकृष्णजी की उपासना।

नुस्त्रतुल दाखिल के लिये दत्तात्रेय की अथवा औतारी पुरूष की उपासना।

उत्पतुल खारिज के लिये हनुमानजी की उपासना।

नकी शकल के लिये श्रीगणेशजी की उपासना।

उत्पतुल दाखिल के लिये देवी उपासना।

इज्जतमा के शकल के लिये श्री विष्णु की उपासना।

तरीख के लिये श्री शिवशंकर की उपासना।